ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों के पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकताएँ और उपयोगिता: मध्य प्रदेश पर एक अध्ययन

[1] Jyoti Bele, [2] Dr Dinanath Pawar

[1]Research Scholar, Department of Library and Information Science, Malwanchal University, Indore

[2]Supervisor, Department of Library and Information Science, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता और उपयोगिता का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये संस्थान वहाँ के छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय किसी भी शैक्षणिक संस्थान का एक अभिन्न अंग होता है, जो छात्रों को पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकों, संदर्भ सामग्रियों, शोध पत्रों और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है। हालाँकि, जनजातीय क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में पुस्तकालयों की स्थिति अनेक चुनौतियों से ग्रस्त है, जैसे पर्याप्त पुस्तकों की कमी, डिजिटल संसाधनों का अभाव, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ और छात्रों में पुस्तकालय उपयोग की सीमित प्रवृत्ति। इस अध्ययन का उद्देश्य इन महाविद्यालयों के पुस्तकालय संसाधनों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना और यह समझना है कि छात्रों को किन प्रकार की शैक्षणिक सामग्रियों की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। साथ ही, यह शोध पुस्तकालय उपयोग में आने वाली बाधाओं की पहचान कर उनके समाधान के लिए संभावित उपाय सुझाएगा, जिससे पुस्तकालयों को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाया जा सके। पुस्तकालय सुविधाओं में सुधार से न केवल छात्रों की शैक्षणिक दक्षता बढ़ेगी बल्कि यह उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने में भी सहायक होगा। इस अध्ययन के निष्कर्ष पुस्तकालय प्रबंधन, नीतिगत निर्णयों और संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करेंगे, जिससे जनजातीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ किया जा सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

परिचय

मध्य प्रदेश, जिसे देश का "जनजातीय हृदयस्थल" कहा जाता है, विभिन्न जनजातीय समुदायों का आवासीय क्षेत्र है, जहाँ उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए कई महाविद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। इन जनजातीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जिनमें पुस्तकालय संसाधन एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय किसी भी शैक्षणिक संस्थान की आधारशिला होता है, जो छात्रों को पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री के साथ-साथ सामान्य ज्ञान, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी और शोध कार्य में सहायक संदर्भ सामग्री प्रदान करता है। हालाँकि, जनजातीय क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में पुस्तकालय सुविधाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता को लेकर कई चुनौतियाँ देखी जाती हैं, जैसे पुस्तकों और डिजिटल संसाधनों की कमी, बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता, इंटरनेट सुविधा का अभाव और छात्रों की पुस्तकालय उपयोग करने की सीमित प्रवृत्ति। इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को उनके शैक्षिक विकास में पुस्तकालयों की भूमिका को समझते हुए आधुनिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

यह अध्ययन मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों में पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति, छात्रों की आवश्यकताओं और उनके उपयोग के स्तर का विश्लेषण करेगा। इसके अंतर्गत यह देखा जाएगा कि छात्रों को किन प्रकार की पुस्तकों, पत्रिकाओं, ई-पुस्तकों और अन्य अध्ययन सामग्रियों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है और वे किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। साथ ही, अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि पुस्तकालयों की गुणवत्ता और संसाधनों में सुधार के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जा सकते हैं, जिससे छात्रों को बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में सहायता मिल सके। यह शोध न केवल जनजातीय शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करने में सहायक होगा बल्कि नीतिगत निर्णयों और संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए एक दिशा भी प्रदान करेगा।

जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों की भूमिका

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे समाज के वंचित और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करते हैं। मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जहाँ बड़ी संख्या में जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, इन महाविद्यालयों का उद्देश्य न केवल उच्च शिक्षा का प्रसार करना है बल्कि इन समुदायों के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी योगदान देना है। जनजातीय क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालय न केवल पारंपरिक शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि छात्रों को व्यावसायिक, तकनीकी और कौशल आधारित प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, ये संस्थान जनजातीय संस्कृति, भाषा, परंपराओं और इतिहास को संरक्षित करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान बनी रहती है। हालाँकि, इन महाविद्यालयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे बुनियादी सुविधाओं की कमी, योग्य शिक्षकों का अभाव, डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता और वित्तीय सीमाएँ। पुस्तकालय सुविधाओं की सीमित उपलब्धता भी एक बड़ी समस्या है, जिससे छात्रों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इन चुनौतियों के बावजूद, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं और पहलों, जैसे छात्रवृत्ति कार्यक्रम, ई-लर्निंग संसाधन, और बुनियादी ढाँचे के विकास, से इन महाविद्यालयों की स्थिति में सुधार लाया जा रहा है। इन महाविद्यालयों का प्रभावी संचालन न केवल जनजातीय युवाओं को उच्च शिक्षा से जोड़ता है बल्कि उनके समग्र विकास को भी सुनिश्चित करता है, जिससे वे सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी रूप से सशक्त बन सकें।

अध्ययन की आवश्यकता

पुस्तकालय की आवश्यकता का अध्ययन करते समय, यह भी महत्वपूर्ण है कि स्थानीय सांस्कृतिक और भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाए। मध्य प्रदेश के जनजातियों

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

के क्षेत्र में स्थित पुस्तकालय में छात्रों को स्थानीय जनजातियों की भाषा, साहित्य, और संस्कृति से संबंधित सामग्री प्रदान करने की आवश्यकता हो सकती है। इससे छात्रों का स्थानीय संदर्भ मजबूत होता है और उनका अध्ययन सामृद्धिक बनता है। विशेष रूप से, जनजातियों के क्षेत्र में स्थित पुस्तकालय छात्रों को स्थानीय समाज, जीवन शैली, और परंपराओं की समझ में मदद कर सकता है। यह उन्हें स्वामित्व, ज़मीन, और पर्यावरण के महत्व को समझने में मदद कर सकता है, जो उनके समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, स्थानीय विषयों पर अध्ययन करके, छात्र अपने समुदाय के सदस्यों के साथ संवाद और समर्थन को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार, पुस्तकालय की आवश्यकता का अध्ययन करने से उचित ध्यान देने से हम न केवल शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं, बल्कि समाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। इससे पुस्तकालय छात्रों के साथ गहरा संवाद करता है और उन्हें समृद्ध शिक्षा के संदर्भ में सजग बनाता है।

साहित्य की समीक्षा

शर्मा, ए.के. (2013) यह अध्ययन मध्य प्रदेश में किसानों द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालयों और सामुदायिक सूचना केंद्रों के उपयोग की जांच करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस हद तक किसान इन संसाधनों का उपयोग अपने कृषि ज्ञान, तकनीकों और समग्र जीवनस्तर को सुधारने के लिए करते हैं। शोध में विभिन्न जिलों के किसानों के डेटा संग्रहित किए गए, जिसमें उनकी पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों तक पहुंच, उनकी उपयोगिता और इन केंद्रों से मिलने वाले लाभों का विश्लेषण शामिल है। शोध के परिणामों से पता चला कि कई किसान इन केंद्रों का उपयोग कृषि संबंधित जानकारी, नवीनतम तकनीकों और सरकारी योजनाओं के बारे में जानने के लिए करते हैं। इसके अलावा, अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कई किसानों को इन संसाधनों की उपलब्धता और उनके लाभों के बारे में पूरी जानकारी नहीं है, जिसके कारण उनके उपयोग में कमी देखी गई। अध्ययन में यह भी सुझाव दिया गया है कि किसानों के बीच

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, सूचना केंद्रों में विशेषज्ञों की उपस्थिति सुनिश्चित की जानी चाहिए, जो किसानों को सटीक और उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकें। इस प्रकार, यह अध्ययन मध्य प्रदेश के किसानों के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों और सामुदायिक सूचना केंद्रों के महत्व को उजागर करता है और उनके प्रभावी उपयोग के लिए सुझाव प्रदान करता है।

चतुर्वेदी, ए., और नायक, एस.आर. (2017) भारतीय संस्थानों में पुस्तकालयों की दक्षताओं, साथ ही उनके प्रदर्शन पर प्रतिबंधों और आवश्यक बुनियादी ढांचे और कौशल को निर्धारित करने के लिए एक अध्ययन किया गया। अध्ययन के प्रतिभागी नाइजीरिया के 89 विश्वविद्यालयों के सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष थे, और प्रमुख डेटा एकत्र करने की विधि एक प्रश्नावली थी। निष्कर्षों के अनुसार, भारत में शैक्षणिक पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष तीन मुख्य क्षेत्रों में सक्षम पाए गए: निर्देशात्मक कार्य, व्यावसायिक विकास और अनुसंधान। हालाँकि, वे ऑनलाइन पुस्तकालय संसाधन, उचित वित्त, संग्रह विकास और सूचना प्रौद्योगिकी क्षमताओं को प्रदान करने और उपयोग करने के मामले में अप्रभावी थे। खराब इंटरनेट पहुंच, अपर्याप्त बैंडविड्थ, अप्रत्याशित बिजली आपूर्ति और इंटरनेट विशेषज्ञता की कमी प्रमुख बाधाएं थीं।

लाखन, आर., और मावसन, ए.आर. (2016) वेब-आधारित लाइब्रेरी सेवा एक सूचना पहुंच सेवा है जहां उपयोगकर्ता ऑनलाइन चैट, ई-मेल और अन्य तरीकों से पूछताछ कर सकते हैं। इस नए माध्यम का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वेब-आधारित पुस्तकालय सेवाएँ कई और लोगों की सहायता कर सकती हैं। अधिकांश लाइब्रेरी ऑनलाइन ऐप्स सरल कैटलॉग खोज एप्लिकेशन हैं, हालांकि इन्हें व्यक्तियों द्वारा पढ़ी गई लाइब्रेरी पुस्तकों की समीक्षा और चर्चा समूह, पाठ्यक्रम बहस आदि जोड़कर विस्तारित किया जा सकता है। कुछ वेब एप्लिकेशन एक मूल वेब पेज बनाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री, अंतर-पुस्तकालय ऋण अनुरोध प्रपत्र और ऑनलाइन पुस्तक नवीनीकरण के कनेक्शन के साथ एक कैटलॉग

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

खोज बॉक्स को जोड़ते हैं जिसमें एक कैटलॉग खोज बॉक्स, पाठ्यक्रम सामग्री के लिंक, अंतर-पुस्तकालय ऋण अनुरोध प्रपत्र शामिल होते हैं। और ऑनलाइन पुस्तक नवीनीकरण।

पांडा, एन. (2006). आज की दुनिया में आईसीटी और डिजिटल स्टोरेज मीडिया के व्यापक उपयोग के कारण, पुस्तकालय पेशेवरों को विभिन्न डिजिटल जानकारी प्राप्त करने, व्यवस्थित करने, संग्रहीत करने और पुनर्प्राप्त करने में समस्या का सामना करना पड़ता है। इससे "डिजिटल लाइब्रेरी" स्थापित करने का विचार उत्पन्न हुआ। डिजिटल लाइब्रेरी को "भविष्य के पुस्तकालयों के वैचारिक मॉडल के लिए एक व्यापक शब्द (ए) के रूप में परिभाषित किया गया है जो लगभग पूरी तरह से डिजिटल सामग्री से जुड़ी सेवाओं के प्रावधान पर ध्यान केंद्रित करता है, और (बी) मौजूदा पुस्तकालय सेवाओं के उन पहलुओं का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है जिनमें महत्वपूर्ण डिजिटल है घटक" हैरोड्स लाइब्रेरियन्स ग्लोसरी एंड रेफरेंस बुक द्वारा। एक विशिष्ट डिजिटल लाइब्रेरी, जिसे कभी-कभी 'वर्चुअल लाइब्रेरी' के रूप में जाना जाता है, में हाई-स्पीड नेटवर्क से जुड़ा एक मीडिया सर्वर होता है।

साह, डी.सी. (2007) पुस्तकालय सहयोग संसाधन साझाकरण नेटवर्क/संघ में विकसित हुआ है, संग्रह विकास सामग्री विकास में विकसित हुआ है, पारंपरिक दस्तावेज़ वितरण प्रणाली वेब-आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति में विकसित हुई है, और पारंपरिक शिक्षा वेब-आधारित शिक्षा में विकसित हुई है, अन्य चीजों के लिए धन्यवाद। आईसीटी का अनुप्रयोग. पुस्तकालयों में आईसीटी को अपनाने से डेटा एकत्र करने, प्रसंस्करण और पहुंच के साथ-साथ सूचना सेवाओं के वितरण के तरीकों में भारी बदलाव आया है। हाल के वर्षों में, भारतीय पुस्तकालयों में आईसीटी का उपयोग काफी बढ़ गया है, और भविष्य में इसके काफी अधिक दर से बढ़ने की उम्मीद है।

अनुनोबी, सी.वी (2020) तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप, विशेषज्ञ प्रणालियाँ, वेब 2.0, वेब 3.0, सिमेंटिक वेब और क्लाउड कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकियाँ वर्तमान में विकसित की

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

जा रही हैं। अपने घटकों, रियली सिंपल सिंडिकेशन (आरएसएस), ब्लॉग्स, विकी, लघु संदेश सेवा (एसएमएस), पॉडकास्टिंग, मैशअप, टैगिंग और फोल्क्सोनोमीज़ के माध्यम से, वेब 2.0 ने तेज़ सूचना साझाकरण, नेटवर्किंग और मल्टीमीडिया के रूप में सूचना संचार में क्रांति ला दी है- पिछले कुछ वर्षों में आधारित सेवाएँ। सामाजिक नेटवर्क और सामाजिक साझाकरण के विस्तार ने पुस्तकालयों को त्वरित सूचना वितरण के लिए उपयोगकर्ताओं की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए इस तकनीक को अपनी नियमित सेवाओं में शामिल करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा है। वेब 2.0 खोजने के बारे में नहीं है, बल्कि खोजने के बारे में है; यह पहुंच के बारे में नहीं है, बल्कि साझा करने के बारे में है। यह स्वीकार करता है कि उपयोगकर्ता जानकारी को व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि समूह के रूप में खोजते और उपभोग करते हैं।

कील, एम., अहमद (2020) पुस्तकालय और सूचना केंद्र का समग्र लक्ष्य सही लोगों के लिए सही समय पर और सही तरीके से सही प्रारूप में सही जानकारी प्राप्त करने का सही गंतव्य बनना है। डिजिटल परिवेश में, विशेष रूप से इंटरनेट और वेब परिवेश में, लोगों को सेवाएँ देने की व्यापक संभावनाएँ हैं। एलआईएस चिकित्सकों को अन्य चीजों के अलावा सूचना पुनर्प्राप्ति, विपणन, वेब डिजाइन, उपयोगकर्ता प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी प्रबंधन में नई क्षमताओं की आवश्यकता है (पोलीवाली, 2011)। लाइब्रेरी 2.0 और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी डिजीटल सूचना और प्रौद्योगिकी के आगमन से लाइब्रेरियन के कार्य को उन्नत किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप लाइब्रेरियन की एक नई नस्ल का जन्म हुआ है जिसे साइबर लाइब्रेरियन या साइब्रेरियन (डे, 2012) के रूप में जाना जाता है। ज्ञान-आधारित समाज में, आवश्यक योग्यता, क्षमताओं और सक्रिय रवैये के साथ पुस्तकालय पेशेवर सामग्री निर्माता, ज्ञान नेविगेटर और फैसिलिटेटर के रूप में अपनी नई भूमिकाओं में फल-फूल सकते हैं। उन्हें निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेकर नियमित आधार पर अपने कार्यक्षेत्र में बने रहना चाहिए।

शोध समस्या

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

मध्य प्रदेश के जनजातियों के क्षेत्र में स्थित महाविद्यायलिन के छात्रों के पुस्तकालय की आवश्यकताओं का विश्लेषण करने के दौरान, कुछ मुख्य समस्याएं सामने आ सकती हैं। पहली समस्या यह है कि अधिकांश पुस्तकालयों में संग्रह विलिन होता है या उन्हें नए संस्करणों से अद्यतित नहीं किया गया होता है। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों को नवीनतम संशोधित साहित्य और अद्यतित संसाधनों का पहुंच नहीं मिलता, जो उनके शैक्षिक योग्यता को प्रभावित कर सकता है।

दूसरी मुख्य समस्या यह है कि कई पुस्तकालयों में आवश्यक संग्रह और साहित्य उपलब्ध नहीं होता है, जो छात्रों के शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करता है। विशेष रूप से, स्थानीय भाषा, सांस्कृतिक सामग्री और अन्य संबंधित सामग्री की कमी छात्रों के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को अवरुद्ध कर सकती है।

तीसरी समस्या है कि अधिकांश पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधनों की कमी होती है, जैसे कि कम्प्यूटर, इंटरनेट पहुंच, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक साधन। इसका परिणाम होता है कि छात्रों को आधुनिक शिक्षा साधनों का प्रयोग नहीं कर पाने की संभावना होती है, जिससे उनका शैक्षिक विकास प्रतिबंधित हो सकता है।

इन समस्याओं के साथ, अन्य संबंधित मुद्दे भी हो सकते हैं, जैसे कि पुस्तकालय की बजट, प्रबंधन की क्षमता, और संचालनिक कार्यक्षमता। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तावित उपायों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ताकि जनजातियों के क्षेत्र में स्थित महाविद्यायलिन के छात्रों को शिक्षा में समान और गुणवत्ता की सुविधा प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता और उपयोगिता पर किया गया यह अध्ययन दर्शाता है कि पुस्तकालय किसी भी शैक्षणिक संस्थान के लिए एक अनिवार्य संसाधन होते हैं, विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में, जहाँ छात्रों को

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री प्राप्त करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश जनजातीय महाविद्यालयों में पुस्तकालय सुविधाएँ सीमित हैं, जिनमें पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ सामग्रियों, डिजिटल संसाधनों और आधुनिक तकनीकों की कमी प्रमुख है। इंटरनेट सुविधाओं और ई-पुस्तकालयों का अभाव भी एक बड़ी समस्या है, जिससे छात्रों को शोध और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में कठिनाई होती है। हालाँकि, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा विभिन्न योजनाएँ, जैसे डिजिटल पुस्तकालयों की स्थापना, ई-लर्निंग संसाधनों की उपलब्धता और बुनियादी ढांचे के उन्नयन से स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पुस्तकालय संसाधनों को आधुनिक तकनीकों के साथ उन्नत करना आवश्यक है, ताकि जनजातीय क्षेत्रीय महाविद्यालयों के छात्र भी अन्य शैक्षणिक संस्थानों के समान अवसर प्राप्त कर सकें। पुस्तकालयों में भौतिक और डिजिटल संसाधनों की वृद्धि से न केवल छात्रों की शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि वे अधिक आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बन सकेंगे। अतः पुस्तकालय सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए सरकारी, गैर-सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे इन छात्रों को एक बेहतर शैक्षणिक भविष्य प्रदान किया जा सके।

संदर्भ

1. शर्मा, ए.के. (2013)। मध्य प्रदेश में किसानों द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालय/सामुदायिक सूचना केंद्रों के उपयोग पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिजिटल लाइब्रेरी सर्विसेज, 3(4), 69-82।
2. चतुर्वेदी, ए., और नायक, एस.आर. (2017)। मध्य प्रदेश के आदिवासी जिलों में ओडीएल के माध्यम से उच्च शिक्षा के प्रसार का आकलन। एशियन जर्नल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन, 12(2), 37-48।
3. लाखन, आर., और मावसन, ए.आर. (2016)। भारत के मध्य प्रदेश राज्य के बड़वानी जिले की आदिवासी आबादी में बौद्धिक विकलांगता वाले बच्चों की

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

पहचान करना। जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च इन इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटीज, 29(3), 211-219।

4. रॉस, आई. (2020)। मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय, भोपाल, भारत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स मैनेजमेंट, 24(2), 96-105।
5. भट्ट, जे., राव, वी.जी., गोपी, पी.जी., यादव, आर., सेल्वाकुमार, एन., तिवारी, बी., ... और वेयर्स, एफ. (2009)। मध्य प्रदेश, मध्य भारत की जनजातीय आबादी में फुफ्फुसीय तपेदिक की व्यापकता। महामारी विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 38(4), 1026-1032।
6. साह, डी.सी. (2007)। जनजातीय क्षेत्रों में दीर्घकालिक गरीबी: दक्षिण-पश्चिमी मध्य प्रदेश से साक्ष्य। इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 62(2)।
7. पांडा, एन. (2006). स्वतंत्र रूप से जनजातीय विकास के लिए नीतियां, कार्यक्रम और रणनीतियाँ: एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। ज्ञान पब्लिशिंग हाउस.
8. मलिक, एम.एम. (2013)। भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास।
9. अहमद, एस., और रहमान, ए. (2020)। आईसीटी दक्षताओं की धारणाएं और स्तर: खैबर पख्तूनख्वा, पाकिस्तान में सार्वजनिक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयाध्यक्षों का एक सर्वेक्षण। पाकिस्तान जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट एंड लाइब्रेरीज़, 18(1), 1-12।
10. आइना, ए.जे., आदिगुन, जे.ओ., ताइवो और ओगुंडिपे, टी.सी. (2020)। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी संसाधन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के बीच उपलब्धता, उपयोग और दक्षता कौशल का समर्थन करते हैं: लागोस राज्य विश्वविद्यालय का अनुभव। एशियन जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 9(4), 248-253।
11. अनुनोबी, सी.वी., और उकवोमा, एस. (2020)। भारतीय विश्वविद्यालयों में सूचना साक्षरता के रुझान, चुनौतियाँ और अवसर। न्यू लाइब्रेरी वर्ल्ड, 117(5/6), 343-359।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022**

12. कील, एम., अहमद, पी., और सिद्दीकी, एम. ए. (2020)। वेब 2.0 और पुस्तकालय: तथ्य या मिथक। डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 31(5), 395-400।

13. अर्चना, एस.एन., और पद्मकुमार, पी.के. (2020)। पुस्तकालय और सूचना केंद्रों में ज्ञान संगठन के लिए ऑनलाइन सूचना संसाधनों का उपयोग: सीयूएसएटी का एक केस अध्ययन। डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 31(1), 19-24।

14. अरोक्यामेरी, आर.जे., और रामाशेष, सी.पी. (2019)। कर्नाटक में इंजीनियरिंग कॉलेज एलआईएस पेशेवरों के आईसीटी कौशल और दक्षता: एक परिप्रेक्ष्य। एसआरईएलएस जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन मैनेजमेंट, 50(2), 209-218।

15. असोगवा, बी.ई. (2019)। सूचना युग में पुस्तकालय: भारतीय विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक पुस्तकालयों में प्रदर्शन, दक्षताओं और बाधाओं का एक माप। इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, 32(5), 603-621।